D.El.Ed. IInd Sem

Subject :- S.St. 1.

Topic :- पृथ्वी के बाह्य बल

भूपृष्ठ मे आन्तरिक शक्तियो के सक्रिय होने से अनेक विषमताएँ जन्म लेती है। परन्तु इन विषमताओ को दूर कर धरातल को सम्पाय एवं सपाट बनाने की प्रक्रिया प्रकृति द्वारा बाह्य शक्तियो के रूप मे सम्पन्न कराई जाती है। भूतल पर उत्पन्न स्थल-स्वरूपो को अपरदित एवं काट-छाँटकर तथा घिसकर सपाट बनाने मे बाह्य शक्तियाँ सक्रिय रहती है। इन्हे अपरदन के कारक कहा जाता है। इनमे प्रवाहित जल, हिम, पवन एवं सागरीय धाराएँ प्रमुख है। इन कारको को सक्रिय बनाने मे तीन तत्वो का योगदान प्रमुख है -

1. सूर्यताप
2. गुरुत्वाकर्षण बल
3. पृथ्वी का घूर्णन

बाह्य शक्तियो को सक्रिय बनाने मे किसी न किसी गतिशील कारक का योग अवश्य ही होता है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

प्रवाहित जल, हिम, पवन एवं सागरीय धाराएं ही भूतल को अपरदित करने में गतिशीलता का कार्य करते है। अपरदन एवं अपक्षय की इस क्रिया को अनाच्छादन कहते है।

मोंकहाउस के अनुसार - "~~अपक्षय~~ अनाच्छादन में उन सभी साधनो के कार्य सम्मिलित है, जिनसे भूपटल के किसी भाग का व्यापित विनाश, अपक्षय तथा हानि होती है। इस उपलब्ध पदार्थ का अन्यत्र विक्षेप होता है। तथा इनमे अवसादी शैलो का निर्माण होता है।"

Thank you

by
Mr. Parveen Raj
Assi. Bo.
B.R.C. Deoband.
SRE

Scanned with CamScanner